मिशन शिक्षण संवाद

वैदिक काल : चार वर्ण

काव्य मंजरी

शैक्षिक कविताओं का संकलन

संकलन

काव्यांजलि टीम

मिशन शिक्षण संवाद

Scanned with CamScanner

मिशन शिक्षण संवाद

चार वर्ण : ब्राह्मण

01

ब्राह्मण वैदिक काल में, प्रमुख और प्रबुद्ध थे।
ब्राह्मण ही यज्ञ,पूजा कर जीवन रखते शुद्ध थे।
भिक्षाटन कर अपना जीवन चलाते थे,
पूजा,यज्ञ आदि इन्ही से करवाये जाते थे।।

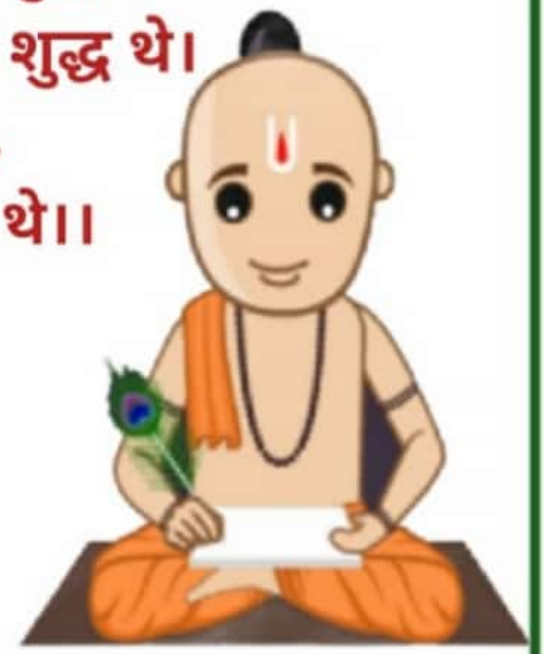

बच्चों को हर विद्या सिखलाते थे,
जीवन का हर कौशल समझाते थे।
किताबी ज्ञान से ऊपर जाकर,
आश्रम में रह साधारण जीवन अपनाते थे।।

विभिन्न ग्रन्थों की रचना करते,
उपचारों की पोथी धरते।
राज्य में जब भी संकट आता,
ब्राह्मण ही सबको राह दिखाता।।

शहनाज़ बानो (स.अ.)
पू०मा०विद्यालय भौरी
मानिकपुर, चित्रकूट

Scanned with CamScanner

मिशन शिक्षण संवाद

चार वर्ण : क्षत्रिय

02

चारो वर्णों में एक प्रमुख अंग थे जो,
वर्ण व्यवस्था के दूसरे स्तम्भ थे जो।
सुरक्षा के लिए हरदम हाजिर थे जो ,
क्षत्रिय, समाज में जाने जाते थे वो।

क्षत्रिय शब्द था उत्पन्न हुआ 'क्षत्र' से,
करते सुरक्षा संप्रभुता और शक्ति से।
पारंगत निपुण थे वो शस्त्र विद्या से ,
दिलाते थे वो जीत युद्ध कौशल से ।।

पारम्परिक रूप से सैनिक रूप था उनका,
युद्ध काल में लड़ना प्रमुख धर्म था जिनका।
ब्राह्मण के बाद प्रमुख स्थान था उनका ,
हाँ,क्षत्रिय धर्म ही तो विशेष था उनका ।।

रचनाकार - अनुज पटैरिया
(इं. प्र.अ.)
प्रा. वि. टिकरिया
मानिकपुर,(चित्रकूट)

Scanned with CamScanner

मिशन शिक्षण संवाद

चार वर्ण : वैश्य

03

वर्ण व्यवस्था का तीसरा वर्ण वैश्य था,
जिसको वैदिक शब्द विश् ने जन्म दिया था।
कृषि ,वाणिज्य अध्ययन, पशुपालन इनका काम था।
सिंधु घाटी की सुघर सभ्यता का कर डाला निर्माण था।

और राज्य की अर्थव्यवस्था को यह सुदृढ बनाते थे,
ब्राह्मण, क्षत्रिय के बाद तीसरे नम्बर पर आते थे।
वर्ण व्यवस्था का तीसरा स्तम्भ ये कहाते थे,
मात लक्ष्मी के पुत्र रूप माने जाते थे।।

राजा के खजाने को समृद्ध यही बनाते थे,
युद्ध, अकाल में मदद का हाथ ये बढ़ाते थे।
वणिक नगर श्रेष्ठि यही कहलाते थे,
सबसे ज्यादा राजा को यही कर चुकाते थे।।

रचना-वन्दना यादव
EMPS ,कम्पोजिट लोढवारा
क्षेत्र व जनपद-चित्रकूट

Scanned with CamScanner

मिशन शिक्षण संवाद

चार वर्ण : शूद्र

04

आर्यों से जो युद्ध करें और युद्ध हार जाते थे,
हारे हुए वो सारे सैनिक शूद्र कहे जाते थे।
सेवा के थे विविध कर्म ही करना इनका काम,
वर्ण व्यवस्था में चौथे नम्बर पर इनका नाम।।

ग्राम सुरक्षा, डाक व्यवस्था और जासूसी काम,
राजा जन इनसे लेते थे कई महत्त्वपूर्ण काम।
यही रथकार बनें राजा के कुम्भकार,ताम्रकार,
आयुध के निर्माण निपुण ये कहलाये लौहकार।।

कालांतर में जाति व्यवस्था हो गयी बहुत कठोर,
सबसे निम्न वर्ग पर रखकर किया इन्हें कमजोर।
जो सेवा के कार्य करे वो वंदनीय होते हैं।
करें राष्ट्र की सच्ची सेवा पूजनीय होते है।।

आर.के.शर्मा (प्र.अ.)
UPS,चित्रवार, मऊ
जनपद-चित्रकूट

Scanned with CamScanner

- रचनाकारों की सूची -

शहनाज बानो, चित्रकूट
अनुज पटैरिया, चित्रकूट
वन्दना यादव, चित्रकूट
आर .के.शर्मा, चित्रकूट

टेक्निकल टीम

आयुषी अग्रवाल,मुरादाबाद
अर्चना अरोड़ा,फतेहपुर
हेमलता गुप्ता,अलीगढ़

संकलन

काव्यांजलि टीम

मिशन शिक्षण संवाद

Scanned with CamScanner